ISSN 2348-3857

पर्यावरणीय शिक्षा एवं विकास

लक्ष्मण सिंह जगरवाल

व्याख्याता, भूगोल
डाइट, टोंक (राजस्थान)

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

शोध सारांश

मनुष्य पर्यावरण का एक हिस्सा है। अन्य प्राणियों के समान ही वह भी भौतिक अभिलक्षणों से प्रभावित होता है। मानव सदैव अपने प्राकृतिक वातावरण से सामंजस्य करता आया है। भारत की संस्कृति का तो कोई भी पक्ष पर्यावरण से अछूता नही है। यहाँ की संस्कृति में सूर्य, वृक्ष, वायु, भूमि व नदियों को देवता मानकर पूजा जाता रहा है। सारे संस्कार, अनुष्ठान त्योहार, उत्सव, नृत्य, गीत, पूजा और कर्म पर्यावरण के हम सखा हैं आदि समाज अन्य प्राणियों के समान पर्यावरण के साथ समायोजना बना कर चलता रहा है। परन्तु पिछले सौ वर्षो से मनुष्य के अदूरदर्शितापूर्ण बर्बर क्रियाकलापों ने पर्यावरण को दूषित कर डाला है जब से विज्ञान ने प्रगति की है, मनुष्य ने अपनी सुख सुविधा जुटाने और बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए औद्योगिक शक्ति का सहारा लिया है और इन सबसे पर्यावरण पर हो रहे कुप्रभावों की ओर से मुंह मोड़ लिया है। इस सबका परिणाम है कि पर्यावरण प्रदूषण जल वायु और विकिरण प्रदूषण की जटिल समस्या से सारा विश्व चिन्तित है। पर्यावरण संरक्षण समाज के हर व्यक्ति का दायित्व है हमें जानना होगा कि पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए सामान्य जनता में जागृति या चेतना किस प्रकार लाई जाए। इसके लिए सर्वप्रथम विविध शैक्षणिक माध्यमों जैसे शिक्षण प्रशिक्षण, प्रचार, प्रसार, प्रयोग को आधार बनाना होगा। विश्व स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को अपनाना होगा।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकसित देशों की ही नहीं अपितु विकासशील व अविकसित देशों में भी व्याप्त है। शिक्षा के माध्यम से हमें यह बताना होगा कि प्रदूषण किसी भी तरह का हो मानव जाति के लिए हानिकारक है मनुष्य स्वयं इसके लिए जिम्मेदार है। यह शिक्षा लोगों को नई सोच व समझ प्रदान करेगी कि विकसित देशों की थाली को सजाने के लिए बाकी दुनिया के देश अपना सब लुटा रहे हैं अपने लोग, अपनी भूमि, वन, जल, पशु, पक्षी इत्यादि। समाज में पर्यावरण की चिंता काफी कम लोगों को है पर्यावरण लगातार बिगड़ रहा है लेकिन इसे थामने की चिन्ता बढ़ती क्यों नहीं। हमें शिक्षा द्वारा बताना है यदि समय रहते पर्यावरण की समस्या का निदान नहीं किया जाता है तो इसके दुष्परिणामों को भुगतने के लिए हमें तैयार रहना होगा। लोगों को जानकारी देनी होगी कि भारत में जल व वायु प्रदूषण की समस्या दिन प्रतिदिन विकराल रूप धारण कर रही है।

1972 में इग्लैण्ड में पर्यावरण शिक्षा पर राष्ट्रीय मंच के निर्माण एवं 1972 में ही अमेरिका में एनवायरनमेण्ट प्रोटेक्शन एण्ड कंजरवेशन पर अधिनियम पूर्व भी कवियों प्रकृतिवादियों, शहर एवं देशीय नियोजकों द्वारा पर्यावरण की शिक्षा दी जाती थी। लेकिन अब यह प्रतिबल व्यक्ति एवं विशिष्ट समूहों से राष्ट्रों तथा यूनेस्को एवं प्रकति संरक्षण के अन्तर्राष्ट्रीय संघो की ओर इस आशा में परिवर्तित हो गया हैं कि लोग यह जानेंगे कि पर्यावरण प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट तथा साधन ह्रास कितना संकटदायी हो सकता हैं। इसके अध्ययन के लिए सबसे अच्छा स्थान स्कूल है। और पहले अध्यापकों को इस ओर उन्मुख करना होगा। संक्षेप में हमारे लिए तीन पहलू महत्वपूर्ण है :-

- पर्यावरण के माध्यम से बहुत कुछ अध्ययन-अध्यापन किया जा सकता है। यह प्रक्रिया प्रतिफलदायक तथा आनन्दवर्धक है
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अत: सामाजिक वातावरण को समझना आवश्यक है
- पर्यावरण शिक्षा देते समय हमें तीन समस्याओं पर विशेष ध्यान देना होगा- अ. जनसंख्या विस्फोट, प्राकृतिक साधनों का ह्रास स. तकनीक प्रगति के साथ दिनों-दिन बढ़ता प्रदूषण

यद्यपि पर्यावरण के बारे में बात करने पर सहज भाव से जो अनुभूति होती है इसके अन्तर्गत पर्यावरण की शिक्षा की परिभाषा सतही तौर पर एकांशी व सतही दिखाई देती है। लेकिन वास्तव में यह बोधोन्मुख व गहरी है क्योंकि यह इस तथ्य को निर्दिष्ट करती है कि पर्यावरण से मानव के सम्बन्ध को सम्मिलित करती हुई सम्पूर्ण जीव मण्डल से जनसंख्या, औद्योगीकरण, प्रदूषण साधन आवंटन व ह्रास, संरक्षण, यातायात, तकनीक, ऊर्जा, शहरी तथा ग्रामीण आयोजन को भी शामिल करती है, इस दृष्टिकोण से पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप अन्तर्बन्धन अन्त: विषयक बन जाता है। और इसका सार हम पृथ्वी पर रहने वाले सभी व्यक्तियों पर एक ऐसी प्रतिबद्धता है जिसके अन्तर्गत हवा, पानी, भूमि तथा भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण की बिगड़ती हुई परिस्थिति को रोकना है।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

(क) ज्ञानात्मक

इसके मुख्यत: 6 आवश्यक अवयव है- ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन। ज्ञानात्मक प्रभाव क्षेत्र के उद्देश्य निम्नांकित है-

- अपने सन्निकट पर्यावरण की जानकारी प्राप्त करने में सहायता करना
- सन्निकट पर्यावरण से परे के पर्यावरण के बारे में जानकारी लेना
- जीविय तथा जीवेत्तर पर्यावरण को समझने में सहायक होना
- विभिन्न पोषण स्तरों पर जीवन की अन्त: निर्भरता को समझने में सहायता करना
- कल की दुनिया पर अनियंत्रित जनसंख्या विकास अथवा अनियोजित साधन उपयोग का प्रभाव समझने में सहायता करना
- जनसंख्या विकास में प्रवृतियों का परीक्षण करना ताकि इन्हें देखकर सामाजिक-आर्थिक विकास के लिये इनका निर्वचन करना
- भौतिक एवं मानवीय संसाधनों के उपयोग का मूल्यांकन करना एवं उपचारात्मक उपाय सुझाना
- पर्यावरणीय प्रदूषण के विभिन्न कारणों का पता लगाकर उनका समाधान प्रस्तुत करना
- सामाजिक तनावों का पता लगाकर उनसे बचने के तरीके निकालना
- अवलोकनीय कौशल को विकसित करना तथा उन विवरणों पर ध्यान देना जो सामान्यत: अप्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा नजर अन्दाज हो जाते हैं
- आकृति, आवाज, स्पर्श, आदतें तथा आवास में विभेदीकरण अपनाने के लिये आवश्यक कौशल को विकसित करना
- निष्पक्ष अर्थ तथा निष्कर्ष निकालने की क्षमता में विकसित करना तथा अर्थपूर्ण सुझाव देने की क्षमता विकसित करना

(ख) मनोभावक

मनोभावक प्रभावक्षेत्र में शिक्षा के उद्देश्य के 5 अवयय हैं- रुचि उत्पन्न करना, दृष्टिकोणों का निर्माण, मूल्यों को बढ़ावा देना, परिबोध विकसित करना तथा समायोजन बैठाना। स्कूल स्तर पर ये उद्देश्य न केवल पर्यावरण बल्कि घर तथा पडौस से भी प्रभावित होते हैं। पर्यावरणीय शिक्षा के मनोभावक उद्देश्य इस प्रकार हैं-

- निकट तथा दूर के पर्यावरण के पेड़ पौधों, जीव-जन्तुओं में रुचि उत्पन्न करने में सहायता करना
- समुदाय व समय के लोगों एवं समस्याओं में रुचि पैदा करने में सहायता करना
- विभिन्न जातियों, प्रजातियों, धर्म तथा संस्कृतियों के प्रति सहनशीलता दिखाना
- प्रकृति के उपहार का गुणगान करना
- पड़ौस तथा बहुमूल्य मानवता के प्रति प्रेम दर्शाना
- समता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, सत्य तथा न्याय का आदर करना
- सभी देशों की राष्ट्रीय सीमाओं का सम्मान करना
- पर्यावरण की सफाई तथा शुद्धता को केन्द्रित करना

(ग) मन:चलित

पर्यावरणीय शिक्षा मन: चालित प्रभाव क्षेत्र के उन सभी उद्देश्यों को पूरी करती है जिन्हें पर्यावरणीय क्रियाओं, शैक्षिक यात्राओं तथा कैंपिंग कार्यक्रमों की सहभागिता के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इसके उद्देश्य इस प्रकार हैं-

- वनोरोपण कार्यक्रम में भाग लेना
- हवा, पानी तथा शोर प्रदूषण को न्यूनतम करने के उद्देश्यों वाले कार्यक्रमों में सहभागिता बढ़ाना

- भू-कटाव रोकने वाले कार्यक्रमों को बढ़ाना
- खाद्य मिलावट को समाप्त करने वाले कार्यक्रमों में भाग लेना
- आस-पडौस के सफाई कार्यक्रमों में सहभागी होना
- ग्रामीण नियोजन, शहरी नियोजन तथा निष्पादन कार्य में अपनी भागीदारी का निर्वाह करना, जैसे-गोबर गैस संयंत्र, सौर ऊर्जा आदि को प्रस्थापित करना

इन सभी उद्देश्यों का सार व्यक्तियों, समूहों तथा सम्पूर्ण समाज का पर्यावरण के प्रति व्यवहार का नया प्रारूप सृजित करना है ताकि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा पारिस्थितिकीय अन्त: निर्माता के बारे में स्पष्ट लगाव के बारे में चेतना जागृत करना। पर्यावरण शिक्षा का बोध कराना अत्यावश्यक है, लेकिन इन उद्देश्यों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब हमें अपने पर्यावरण की पूरी तरह से जानकारी हो। पर्यावरण शिक्षा के अध्यापक व विद्यार्थियों को सांस्कृतिक पर्यावरण के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करना होगा। उन्हें चाहिए कि वे नैतिक मूल्यों का क्षय होने से रोकें और देश की सामाजिक व आर्थिक प्रगति के लिये सुचालक नये मूल्यों को बढ़ावा दें।

पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व

आज पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या से सम्पूर्ण मानव समाज अभिशप्त होने के कारण वैज्ञानिक एवं पर्यावरणविद इसके निदान हेतु प्रयत्नशील हैं। पर्यावरण आंतकवाद विश्व-जनमानस पर एक नई चुनौती है। इस दिशा में जन-सहयोग तो आवश्यक प्रतीत होगा ही, सब कार्यक्रमों के बारे में समुचित जानकारी देने के लिये पर्यावरण शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। इसके महत्व को कतिपय निम्न आधारों पर अंकित किया जा सकता है-

- पर्यावरण शिक्षा ही बच्चे को अनिश्चित विचारों से निश्चित विचारों की ओर बढ़ाने में सहायक होती हैं इस दिशा में बच्चे की आरम्भिक ग्राह्यता एवं सोच उतनी ही अस्पष्ट होती है जितना कि उसकी पहली गति व बोलचाल। यदि देखता हो तो एक शिशु रंगो को पहचान नहीं पाता लेकिन ज्यों ही बड़ा होता हैं वह इन रंगों के विभिन्न प्रकारों को पहचानना आरम्भ कर देता है। पर्यावरण शिक्षा इस अवलोकनीय कौशल के विकास को तीक्ष्ण करती है तथा बच्चे के दिमाग में निशिचित से निश्चित की ओर विचारों के संक्रमण को तेज करती है।
- पर्यावरण शिक्षा बच्चे को मूर्त से अमूर्त की ओर बढ़ने में सहायक है पर्यावरण मूर्त वस्तुओं से भरा हुआ है जिनका बालक परीक्षण करता है और निर्वचन करता है तथा उसके बाद निष्कर्ष निकालता है विभिन्न प्रकार के पौधों व पशुओं को देखकर उनकी प्रजाति के अनुसार उनका वर्गीकरण करता है।
- पर्यावरण, प्रदूषण के खतरों को जानने, हवा व जल के प्रदूषण को पहचानने, वन्य-जीवन के विनाश के दुष्परिणामों को जानने, भू-संरक्षण पर निरन्तर ध्यान देने के लिये पर्यावरण शिक्षा का अपना अद्वितीय महत्व है। मानव जाति को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये इन समस्याओं का समाधान करना चाहिये। बच्चों को 'चिपको आन्दोलन' जैसी क्रियाओं को समझना होगा। जहाँ वन-विनाश को रोकने तथा हवा व पानी प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिये जन आन्दोलन का सहारा लिया जाता है, वास्तव में पर्यावरण समस्याओं को सुलझाने के लिये ऐसी अभिप्रेरणा विकसित करनी होगी।
- सामाजिक प्रासंगिकता में पर्यावरण शिक्षा का समाजिक महत्व है। मानव की भौतिक तथा इसके सामाजिक पर्यावरण अन्त क्रिया तथा मानव दृष्टिकोण को परिवर्तित करने में इसकी भूमिका को अधिक समय तक नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें हमें यह पता चलता है कि किस प्रकार अनियंत्रित जनसंख्या व अनियोजित विकास हमारे जल व वायु को प्रदूषित कर सकते है। भूमि का क्षय करते हैं और इस प्रकार निर्वाह व अस्तित्व के लिये खतरा उत्पन्न करते हैं।

अत: पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा के सामान्य उद्देश्य के भाग के रूप में स्वीकार किये जाने चाहियें। चूंकि शिक्षा मनुष्य को विस्तृत अर्थ में सम्पूर्ण जीवन के लिये तैयार करती है इसलिये एक शिक्षित व्यक्ति के लिये जानना आवश्यक है कि किसी प्रकार स्वस्थ जीवन जिया जाए, बीमारी से कैसे बचा जाए, शरीर की देखभाल कैसे हो, बौद्धिक विकास कैसे हो, जीवन की

आवश्यकताओं को व सुखों को कैसे प्राप्त करने के लिये पर्यावरण शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है वस्तुत: पर्यावरणीय शिक्षा बच्चों, प्रोढ़ों के लिये आत्मसंतोष तथा सामाजिक विकास के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। परिस्थितिकी संतुलन को समझने, भौतिक संस्कृति को सम्बंधित करने, प्रकृति व समाज का आनन्द प्राप्त करने के संदर्भ में पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व शाश्वत रूप से बना हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राघवंशी, अरुण, चन्द्रलेखा राघवंशी, पर्यावरण एवं प्रदूषण, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1987
2. श्रीवास्तव एवं राव, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1990
3. नेगी, पी.एस., पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ, 2007
4. वार्षिक प्रतिवेदन 2009-10 राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, जयपुर
5. भूगोल और आप, आइरिस पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली
6. योजना मासिक पत्रिका, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली